# द्वितीय अध्याय

## ' युगे - युगे क्रांति ' नाटक की कथावस्तु '

## द्वितीय अध्याय

### ' युगे-युगे क्रान्ति ' नाटक की कथावस्तु ' --

**प्रास्ताविक —**

' युगे-युगे क्रांति ' विष्णु प्रभाकर का प्रसिध्द सामाजिक नाटक है। इस नाटक का प्रकाशन सन १९६९ में हुआ है। इस नाटक में विवाह संस्था के परिवर्तित दृष्टिकोणों को उजागर किया गया है। इसमें सन १८७५ से आज तक के समय में विवाह क्षेत्र में किस तरह का परिवर्तन होता आया है इसको स्पायित किया है।

**२.१ कथावस्तु —**

नाटक में जब परदा उठता है तो एक व्यक्ति अग्रभाग में घूमता हुआ नजर आता है। जो नाटक का सूत्रधार है। वह एक - दो बार ऊपर जाकर द्वार से भीतर की ओर मुँह करके बोलता है —' देख लीजिए आधा घण्टा होने को है, अभी तक कोई नहीं आया। ये आजकल के लोग। अपना दायित्व तो जैसे कोई समझता ही नहीं। ये लोग जीवन को क्या समझेंगे। पूर्वाभ्यास के बिना नाटक क्या खाक सफल होगा।' [१]

दाहिनी ओर से एक अधेड उम्र का व्यक्ति मंचपर प्रवेश करता है, जिसका नाम देवीप्रसाद है।

देवीप्रसाद को देखते ही सूत्रधार कहता है,' जनाब अब तक कहाँ थे ?' इस प्रश्न को सुनते ही देवीप्रसाद हतप्रभ हो जाता है, क्योंकि वह सूत्रधार को न

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे-युगे क्रांति - पृ.५-६।

जानता है,न पहचानता है । वह अपना परिचय करा देता है लेकिन सूत्रधार कुछ भी सुनना नहीं चाहता । वह देवीप्रसाद को अपने नाटक का पात्र बनाना चाहता है ।

अपने नाटक का परिचय देते हुए सूत्रधार कहता है कि यह नाटक जीवन से संबंध रखता है । जो व्यक्ति,जीता है वह इस नाटक का पात्र बन सकता है ।' सूत्रधार क्रांति की खोज में निकला है और वह उसे अपने पात्रों के माध्यम से खोजना चाहता है । उन सब पात्रों का दावा है कि उनमें से प्रत्येक क्रांतिकारी है । इसी समय बडे द्वार पर प्रकाश तेज होता है और उससे होकर पाँच व्यक्ति यंत्रवत एक पंक्ति में आकर मंच पर खडे हो जाते हैं । वे सभी युवा हैं ।

पहला व्यक्ति सन १८७५ के आसपास के युग का प्रतिनिधित्व करता है, दूसरा सन १९०१ का ,तीसरा सन १९२०-२१ का,चौथा सन १९४२ और पाँचवा अत्याधुनिक युग का प्रतिनिधि है ।

लाईन में खडा पहला व्यक्ति उत्तेजित भाव से कहता है,मैं जानता हूँ क्रांति क्या होती है,क्रांति मैंने की थी । उसका विरोध करते हुए दूसरा व्यक्ति कहता है - तुम तो प्रतिक्रियावादी थे क्रांति तो मैंने भी की थी, जिसने पहली बार क्रांति का अर्थ समझा और घर की चार दीवारे तोडकर उसका स्वर - घोष किया । तीसरा पुरूष मुस्कराते हुए कहता है :,' क्रांति का सही रूप केवल मैं ही समझ सका हूँ मैंने ही सही अर्थ उसे दिए । यह सुनकर दूसरी नारी और चौथा पुरूष एक साथ हँसते हैं और कहते हैं,बिना परंपरा से मुक्ति पाए क्रांति का सही अर्थ नहीं समझा जा सकता । हमने इतिहास को नया मोड दिया । क्योंकि इतिहास को लीक से निकाले बिना क्रांति अर्थहीन है । क्रांति हमने की है । हम वास्तव में पहले क्रांतिकारी हैं ।

इस तरह सब अपने आपको पहला क्रांतिकारी घोषित करने की चेष्टा करते हैं । सब उत्तेजित हो उठते हैं । सभी स्वर एक-दूसरे में उलझ जाते हैं । कुछ

ही क्षण बाद स्वरों के शांत होते - होते सूत्रधार और देवीप्रसाद मंचपर आ जाते हैं।

देवीप्रसाद की समझ में कुछ नहीं आता। उसे समझाने के लिए सूत्रधार बताता है कि अभी तो नाटक आरंभ ही नहीं हुआ यह तो प्रवेशक का पूर्वाभ्यास है। यह सब नाटक के पात्र हैं।' वह कहता है कि इन पात्रों के आधार से ही मैं क्रांति की तलाश कर रहा हूँ। ये सब पात्र अपने आप को क्रांतिकारी कहते हैं। लेकिन अपने पुत्रों की दृष्टि में ये संस्कृति और सभ्यता के शत्रु हैं और दिशाहीन हैं। हर एक पीढ़ी को उनकी संतान उन्हें प्रतिक्रियावादी व्यक्ति समझाती है।

यहाँ आकर नाटक का प्रारंभ होता है।

सूत्रधार एक-एक पात्र की कहानी सुनाता है।

प्रथम कहानी है सन १८७५ के आसपास की, कल्याणसिंह और रामकली की जो इस नाटक में पहली पीढ़ी है।

उस काल में पति-पत्नी एक-दूसरे का मुँह नहीं देखा करते थे, पर कल्याणसिंह को यह अन्याय लगता है। उसे लगता है कि अपनी पत्नी का मुँह देखने में क्या पाप है? रामकली भी अपने पति कल्याणसिंह को देखना चाहती है। लेकिन डर के कारण देख नहीं पाती। कल्याणसिंह उसे समझाते हुए कहता है --

कल्याणसिंह - सच-सच बताना तुम्हारा मन नहीं कि तुम मुझे देखो? बोलो ना जवाब क्यों नहीं देती। इसका मतलब है कि तुम्हारा मन भी करता है। करना भी चाहिए।

रामकली - ( झिझकते हुए ) करता तो है लेकिन मन तो बहुतसी ऐसी-वैसी बातों को करना चाहता है। वे क्या सभी माननी चाहिए। फिर भी यह सच है कि मेरा मन तुम्हें अच्छी तरह से देखने को करता है।'[१] पति-पत्नी दोनों दिन के उजाले में एक-दूसरे को देखने का रास्ता निकालते हैं और मुँह भी देखते हैं। लेकिन इसके कारण कल्याणसिंह को अपने पिता के हाथों पिटना पड़ा बहुत दिनों

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे - युगे क्रांति - पृ.१७।

तक इसी बात को लेकर उनके घर में और पास-पड़ोस में हाहाकार मचा । देवी-प्रसाद कल्याणसिंह और रामकली के साहस की प्रशंसा करता है । क्योंकि कल्याणसिंह ने समाज को खोखला करनेवाले एक पाखण्ड का पर्दाफाश किया । इसी कारण से कल्याणसिंह स्वयं को क्रांतिकारी कहने लगता है । लेकिन देवी-प्रसाद इसके इस काम को क्रांति नहीं कह सकता ।

इसके पश्चात सूत्रधार उसे २५ बरस बाद की कहानी की ओर ले जाता है । अब वे दोनों सन १९०१ में पहुँच गए हैं । मंचपर एक प्रौढा है जो प्रथम दृश्य की रामकली है । उसके पास उसका जवान बेटा प्यारेलाल बैठा हुआ कह रहा है -

" प्यारेलाल - मैं कहता हूँ माँ, पुरुष को जब एक से अधिक शादी करने का अधिकार है तो नारी ने ही कौन-सा अपराध किया है । पुरुष एक स्त्री के जीते-जी दूसरी स्त्री ला सकता है लेकिन नारी मरी जवानी में और जवानी में ही क्यों बचपन में ही पति के मर जाने पर दूसरी शादी नहीं कर सकती उसने अपने पति को आँख उठाकर देखा तक नहीं । छोटी-सी नादान उम्र में ही वह विधवा हो गई है । वह यह भी नहीं जानती कि जिन्दगी किस चिड़िया का नाम है । विवाह होता क्या है ? लेकिन यह बर्बर समाज उसे दूसरा विवाह करने का अधिकार नहीं देता । हाँ तड़पने का अधिकार देता है, यौवन को बरबाद करने का अधिकार देता है । चोरी-चोरी पाप करने का अधिकार देता है । लेकिन दूसरी शादी करने का अधिकार नहीं देता । लेकिन हमने निश्चय किया है ।" [१] उसका निश्चय था विधवा के साथ शादी करना था, लेकिन कल्याणसिंह चिढ़ जाता है और उसे कहता है --"

" कल्याणसिंह - ठीक क्या है और क्या नहीं, यह मैं जानता हूँ । तेरे लिए क्या सही है और क्या गलत इसका फैसला करने का हक मुझे है । इस खानदान की इज्जत किस में है और किस बात में नहीं है इसको तेरे माँ-बाप तुझसे कहीं अच्छी

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे-युगे क्रांति - पृ.२३-२४ ।

तरह जानते हैं। तू मेरा बेटा है। मेरी बिना इजाजत तुझे कुछ भी करने का हक नहीं। समझा ?" [१]

फिर भी प्यारेलाल कलावती नामक विधवा से शादी करता है। कल्याणसिंह क्रोध में आकर अपने जवान बेटे प्यारेलाल पर हाथ उठाता है। फिर भी प्यारेलाल अपने निर्णयपर दृढ है। अंत में कल्याणसिंह बेटे प्यारेलाल को घर से बाहर निकालने की धमकी देता है। कल्याणसिंह और प्यारेलाल दोनों अपने विचारोंपर अडे रहते हैं।

कुछ देर बाद प्यारेलाल और कलावती वधू-वर के वेश में मंच पर आ जाते हैं। उपस्थित सज्जन उनका स्वागत करते हैं। फिर बाहर से कुछ लोगोंका शोर बढता है। इस विवाह का वे लोग विरोध करते हैं। तब पंडितजी उन लोगों को शांत करते हैं और कहते हैं --

" पंडितजी - जब-जब भी सुधार और क्रांति का स्वर उठता है, पाखण्डी लोग इसी तरह बाधा डालते हैं। लेकिन विश्वास रखिए, वे हमारा कुछ नहीं बिगाड सकते। शोर मचानेवाले कायर होते हैं। उनमें क्रांति का सामना करने का साहस नहीं होता। कायर कभी सदाचारी नहीं हो सकता।" [२]

कुछ लोग प्यारेलाल का समर्थन करते हैं। उस जमाने के लोगों के विचारों को देखकर देवीप्रसाद को हँसी आ जाती है। तब सुधार कहता है इन्हीं के बीच मुझे क्रांति खोजनी है। कल्याणसिंह ने अपने जमाने में पत्नी का मुँह देखकर क्रांति की और बेटा जब क्रांति करने लगा तो उसे पापी कहा, उसका विरोध किया।

अब कालचक्र तेजी से घूम जाता है। जो आज क्रांति करने का दावा करते हैं वे कल प्रतिक्रियावादी तथा रूढिप्रिय बन जाते हैं। प्यारेलाल ने अपने

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे-युगे क्रांति - पृ.२४।

२ वही पृ.२४।

माता-पिता की इच्छा के विरूध्द विद्रोह किया परंतु जब उसकी लड़की ने समय का साथ देने का प्रयत्न किया तब वह क्रोधित हो उठता है। अब सन १९२० का काल आ गया। गांधीजी के असहयोग आंदोलन का प्रारंभ था। प्यारेलाल की बेटी शारदा घर की चार दीवारें लांधकर समाज में खुले मुँह ही घूमती नहीं बल्कि उसके सिर पर पल्लू भी नहीं है। और वह सभी नारियों का नेतृत्व करते हुए भाषण देती है --

" शारदा - प्यारी बहनों मैं तुम्हें अपनी कहानी सुना रही हूँ। जिस दिन मेरे सुधारक पिता श्रीमान प्यारेलालजी ने मेरे बाजार में मेरे गाल पर इसलिए थप्पड मारा था कि मेरी साडी का पल्ला सिर से उतर गया था, तो मैंने उसी दिन निश्चय कर लिया था, कि मैं इन पुराने दकियानूसी रीति-रिवाजों को अब और नहीं मानूँगी। रहा होगा कभी किसी युग में सिर ढकना अच्छी बात लेकिन आज इन बातों की कोई जरूरत नहीं। यह रूढियाँ हमें कमजोर बनाती हैं।" [१]

"गांधीजी ने कहा है कि इस युध्द में नारी को भी पुरूष के कन्धों से कन्धा भिडाकर भाग लेने का अधिकार है। नारी पुरूष से किसी भी बात में पीछे नहीं है। उसके अधिकार समान हैं उसके कर्तव्य भी समान हैं।" [२]

शारदा के इस भाषणबाजी के कारण पुलिस उसे जेल में ले जाते हैं। जेल से घर चलने को शारदा इन्कार करती है। तब प्यारेलाल कहता है --

" प्यारेलाल - क्रांति मैंने भी की है लेकिन क्रांति का अर्थ यह नहीं है कि कुल, समाज और धर्म को लाज को घोलकर पी लिया जाए।" [३]

प्यारेलाल के विचारों में नारी की शोभा-कोमलता और सुन्दरता है, पौरूष और वाचालता नहीं है।

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे-युगे क्रांति - पृ.३६।
२ वही पृ.३७।
३ वही पृ.४४।

प्यारेलाल के इन विचारों पर डॉ.के.पी.शाहा अपने प्रबन्ध में लिखते हैं --

" यह समाज और धर्म की विडंबना है। इसका कारण है हमारा पुरुष प्रधान समाज। उसने अपने सुख और सुविधा के लिए स्त्री पर ज्यादा बंधन डालकर उसे अबला बना दिया।" [१]

प्यारेलाल अपनी बेटी पर उखड रहा है। इसके बाद विमल और शारदा मुक्त भाव से मंचपर बातें करते हुए आते हैं। विमल के पिता गांधीजी के परमभक्त हैं। उनको शारदा साक्षात ' लक्ष्मीबाई ' लगती है। विमल शारदा को अपनी पत्नी बनाना चाहता है लेकिन शारदा के पिता इस बात को तैयार नहीं होंगे क्योंकि विमल पंजाब का खत्री और शारदा संयुक्त प्रांत की अग्रवाल है। फिर भी शारदा घबराती नहीं। वह अपना भविष्य खुद बनाना चाहती है। विमल से कहती है -- " मैं आत्महत्या करूँगी लेकिन उस दमघोटू वातावरण में वापिस नहीं जाऊँगी।"

इसके बाद प्यारेलाल बहुत गुस्सा करता हुआ आता है, यह कहता है कि अपनी बेटी का गला घोंट दूँगा और खुद जिंदा नहीं रहूँगा। इसके बाद देवी-प्रसाद और सूत्रधार फिर मंचपर आते हैं। सूत्रधार कहता है कि " देखा तुमने, ये लोग भी क्रांतिकारी थे। समझ में नहीं आता क्रांति का कौन-सा रूप सही है ?"[2]

देवीप्रसाद तो शारदा का रूप देखकर प्रभावित हो जाता है फिर भी उसे ऐसा लगता है कि शारदा ने जितने आत्मविश्वास से विमल तथा जनता से बातें की थीं उतनी आत्मविश्वास से उसे पिता से बातें करनी चाहिए थीं। देवी

---

१ डॉ.के.पी.शाहा - विष्णु प्रभाकर के साहित्य का अनुशीलन - शिवाजी विश्वविद्यालय ,कोल्हापुर की पीएच.डी.उपाधि हेतु स्वीकृत शोध-प्रबन्ध - पृ.९७।

2. विष्णु प्रभाकर - युगे-युगे क्रांति - पृ.५१।

प्रसाद की भी एक बेटी है। वह अपनी बेटी के शादी के लिए परेशान है। उसके मत से पिता के भी कुछ अधिकार हैं कर्तव्य हैं और वे कर्तव्य और अधिकार उसे इसलिए प्राप्त हुए हैं कि वह अधिक अनुभवी है। देवीप्रसाद के इस कथन के बाद सूत्रधार ऐसा वक्तव्य करता है कि --

" सूत्रधार — हर बुजुर्ग अनुभवी होता है। लेकिन मुसीबत यह है कि अनुभव और क्रांति की सदा अनबन रहती है। दोनों एक-दूसरे को फूटी आँखों नहीं सुहाते। अनुभव स्थापित सत्यों की रक्षा करता है लेकिन क्रांति नए सत्यों की खोज करती है।" [१]

अब कालचक्र घूमता हुआ सन १९४२ में आ पहुँचता है। यह वही विमल है, जिन्होंने जातीयता और प्रांतीयता की दीवारें तोडकर स्वतंत्रता के लिए घर से बाहर आनेवाली लडकी शारदा से आगे बढकर विवाह किया, वही आज कितना परेशान है, क्योंकि उसके बेटे प्रदीप ने कोर्ट में जाकर जेनेट नामक ईसाई कोली लडकी से शादी की है और इसकी कोई भी सूचना उसने अपने माता-पिता को नहीं दी है। धर्म और समाज की स्थिति देखते हुए विमल चाहता है कि जेनेट को शुध्द करके जान्हवी बना लिया जाय। लेकिन प्रदीप इन बातों को नहीं मानता। उसके विचारों में उसके माँ-बाप दकियानूसी, पुरातनपंथी हैं। माँ एक खूसट बुढिया है। प्रदीप अपने माता-पितासे मिलने आता है। उसको प्रणाम करता है, पर कोई जवाब नहीं देते। तब प्रदीप उनसे कहता है - हम यहाँ रहने के लिए नहीं आए है। बस, आपसे मिलने के लिए आए है। आप बडे समाजसुधारक है निश्चय ही हमें क्षमा कर देंगे। तब शारदा कहती है --

" शारदा - हमें कोई एतराज नहीं है। हम क्या दकियानूसी हैं ? हमने तो सदा नए युग का स्वागत किया है बल्कि हमने नए युग को लाने के लिए बराबर जी तोड कोशिश की है। लेकिन तुम जानो हर बात की सीमा होती है। फिर परिवार

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे-युगे क्रांति - पृ.५२।

और समाज की बात है। उनको साथ लेकर चलने से ही बदला जा सकता है। जब तक उनके भीतर से हृदय परिवर्तन की बात न उठे तब तक हमें सावधानी से चलना चाहिए।" [१]

शारदा की यह बात सुनकर हम अचरज में पड़ते हैं क्योंकि इसी शारदा ने अपने समय में धर्म, समाज की फिक्र नहीं की थी और परंपरा को तोडा था। लेकिन अब वह परंपरावादी बन गयी है ऐसा लगता है।

विमल अपनी जायदाद से प्रदीप को कुछ देना नहीं चाहता। तभी प्रदीप की बहन सुरेखा वहाँ आती है, उसे लगता है पिताजी नाराज है। तब सुरेखा कहती है --

" सुरेखा - आप नाराज हैं पिताजी लेकिन भैय्या ने कुछ बुरा तो नहीं किया। आप शुध्दि ही तो चाहते थे उससे क्या होता है ? हमें तो यह अच्छा नहीं लगता।" [२]

माँ को भी वह कुछ बातें बताती है -

" बिना सहे क्या कुछ होता है, माताजी ? और सहने के लिए जरूरत होती है साहस की। तभी क्रांति का जन्म होता है। क्रांति के बिना समाज में परिवर्तन नहीं हो सकता। आपको तो खुश होना चाहिए। आप लोगों ने भी एक दिन ऐसा ही साहस किया था।" [३]

सुरेखा की ये बातें सुनकर उसके पिताजी क्रोधित होते हैं। फिर भी वह पिताजी से कहती है --

" युग की पुकार सुनना यदि रंग चढना है तो मैं इसे अपना गौरव समझूँगी। लेकिन पिताजी, एक बात कहती हूँ। जैसा सागर के ज्वार को आदेश नहीं दिया जा सकता वैसे ही नई पीढी की आकांक्षाओं को भी अपनी सुविधा के अनुसार नहीं

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे-युगे क्रांति - पृ.५८।

२ वही पृ.६१।

३ वही पृ.६१-६२।

मोडा जा सकता ।"[१]

सुरेखा को अपनी माँ से यह आशा नहीं थी कि वह भी धर्म तथा नाम बदलने के पक्ष में होगी । यहाँ आकर उसकी माँ भी हार गई ऐसा उसे लगता है । उसका यह भी कहना है कि मनुष्य मनुष्य है,धर्म,मन और जाति बदल जाने से वह नहीं बदल जाता । शुध्दि का ढोंग करना मनुष्य और मनुष्यता का घोर अपमान है । वह अपने भाई और जैनेट का,अपना घर होने पर हार्दिक स्वागत करना चाहती है ।

यह हो गई इस नाटक की चौथी पीढी जिसका उसके पहले पीढी ने साथ नहीं दिया ।

अब नाटक चरमसीमापर पहुँच जाता है । समय का कालचक्र तेजी से घूमता रहता है । २५ वर्ष बीत चुके हैं । प्रदीप और जैनेट फिर इसी घर लौट आए हैं । प्रदीप आकंठ राजनीति में डूबा हुआ है । यश और प्रतिष्ठा,उसे सब कुछ प्राप्त है ।

व्यग्रता के साथ प्रदीप मंचपर प्रवेश करता है । उसके हाथ में निमंत्रण पत्र है जो उसकी बेटी अन्विता की शादी का है । लेकिन दुल्हे की जगह दीपक का नाम नहीं है । वहाँ स्वीड चित्रकार नेलसन का नाम है । जैनेट का इस बात पर विश्वास नहीं है उसने अपनी बेटी को शादी के बारे में पूर्ण स्वतंत्रता दी है लेकिन वह चाहती है कि जब दीपक के साथ प्रेम है तो नेलसन के साथ शादी कैसी होगी ? जैनेट को लगता है कि अब प्रेम के अर्थ बदल गए हैं । इस बारे में वह अपने बेटे अनिरुध्द से पूछती है तो वह कहता है --

" तो क्या हुआ ? कल दीपक से प्यार करती थी आज नेलसन से करती है । असल बात प्यार करने की है,सो वह करती है । व्यक्ति कोई भी हो सकता है । इस बात को लेकर आप इतने परेशान क्यों है आप की तो जिम्मेदारी नहीं है ।"[२]

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे-युगे क्रांति - पृ.६२ ।

२ वही पृ.७० ।

12550
A

यह सुनकर उसके पिता प्रदीप कहते हैं --

" ( क्रुध्द होकर ) मैं जिम्मेदारी की बात नहीं कहता ।
लेकिन आदमी की कुछ मान्यताएँ होती हैं,कुछ मूल्य होते है ।" [१]

लेकिन अनिरुध्द के विचारों में मूल्य स्थिर नहीं होते, यहाँ मूल्य बदलते हुए दिखाई देते हैं ।

अनिरुध्द हर दिन नई संगिनी का पिता से परिचय कर देता है । इस बात से क्रुध्द होकर प्रदीप उसे परिचय की जरूरत नहीं यह बताता है । तब अपने इस बर्ताव की सफाई देने के लिए अनिरुध्द कहता है --

" पिताजी सिध्दांत के नामपर दल बदलते हैं । बेटा प्रेम के नाम पर संगिनी बदलता है ।" [२]

विवाह में वह विश्वास नहीं करता । क्योंकि स्त्री के लिए पति अनिवार्य नहीं है, पुरूष अनिवार्य है । अनिरुध्द कहता है --" प्रेम मुक्ति में है,बंधन में नहीं विवाह स्त्री की गुलामी का पट्टा है,इसलिए बंधन है ।" [३]

अन्विता अपने माता-पिता को अपनी शादी का निमंत्रण देने आती है लेकिन वे दोनों उसका स्वीकार नहीं करते । तब अन्विता कहती है कि अगर " आप समय के साथ नहीं चलेंगे तो पीछड जायेंगे लेकिन प्रदीप बेटी की बात नहीं मानता । तभी वहाँ सुरेखा आती है और अन्विता को पीछडी हुई कहती है । क्योंकि अन्विता की उमर छब्बीस वर्ष की है और अनिरुध्द की चौवीस । उसने दो बरस में तीन संगिनियाँ बदली । वह केवल स्त्री और पुरूष की सत्ता में विश्वास करता है,याने नर और मादी की सत्ता में । तब अन्विता कहती है कि, मैं भी जब चाहे नेलसन से अलग हो सकती हूँ । अनिरुध्द के विचारों में अगर

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे-युगे क्रांति - पृ.७० ।
२ वही पृ.७२ ।
३ वही पृ.७४-७५ ।

अलग होना है तो पहले बंधन में पड़ना ही क्यों ? इसी बहस के साथ अन्विता और सुरेखा चली जाती है।

इस बहस में प्रदीप मानो खो गया है। फिर जैसे गहरी नींद से वह जाग उठा है। जैनेट से वह कहता है कि' अनिरुध्द के दर्शनशास्त्र के अनुसार तुम स्त्री और मैं पुरुष ,तुम मादा और मैं नर।' तब जैनेट कहती है कि हम दोनों नर मादा हो सकते हैं लेकिन काल और आयु के बंधन से मुक्त नहीं है। इसी विचार को आगे बढाते हुए प्रदीप कहता है कि यह ' लेकिन' शब्द ही बुढ़ापे की निशानी है। यह सहारा हमको दकियानूसी और प्रतिक्रियावादी बनाता है।

अब नाटक अंतिम सीमा पर आ पहुँचता है। देवीप्रसाद और सूत्रधार मंच पर आते हैं। सूत्रधार प्रदीप की बात का समर्थन करते हुए कहता है कि जब पिता,पुत्र के विरुध्द खड़ा होता है तो वह स्वयं पिता का ही नवीन संस्करण होता है।

देवीप्रसाद यह सब देखकर खोया-खोया सा रहता है। उसे लगता है यह सब नाटक था जो उसने स्वप्न में देखा था। वह अपनी लड़की ज्योन्सा के लिए योग्य वर की तलाश में निकला है। तभी एक स्त्री तेजी से मंचपर आकर देवीप्रसाद को सूचना देती है कि उसकी बेटी ने कल कोर्ट में जाकर विवाह किया। यह सुनते ही वह हक्का-बक्का रह जाता है। लेकिन बेटी का पत्र पढ़ते ही शांत हो जाता है। तुरंत खर्राटे भरने लगता है। सूत्रधार भी मंच से चला जाता है उसे लगता है अब सचमुच क्रांति द्वार खटखटा रही है।

तभी अंदर से एक-एक करके सभी पात्र मंच पर आ जाते हैं। वे देवीप्रसाद की ओर बड़े अचरज से देखते हैं। उन्हें लगता है शायद यह भी इस नाटक का कोई पात्र है। तभी सूत्रधार मंचपर प्रवेश करते हुए कहता है कि हमें वास्तविक जीवन का एक पात्र मिल गया है। नाटक यहीं पर समाप्त होना चाहिए। उसी वक्त देवीप्रसाद यंत्रवत नींद में ही बड़बड़ाने लगता है कि मैं उसका पिता हूँ। मुझसे पूछे बिना उसे विवाह करने का अधिकार नहीं है। मैं उसे अभी लेकर

आऊँगा यंत्रवत, बिना किसी ओर देखे नींद में ही उठ वह बाहर की ओर चला जाता है। तब एक पात्र कहता है कि अब अंत हुआ। ऐसा अंत जो कभी संघर्ष को समाप्त नहीं होने देगा। सब उसी तरह खडे-खडे चकित भाव से देखते रहते हैं। यहीं पर नाटक समाप्त होता है।

इस नाटक के बारे में डॉ.वीणा गौतम लिखती है --

" विष्णु प्रभाकर रचित 'युगे-युगे क्रांति' का प्यारेलाल बाल-विधवा से विवाह कर मध्यवर्ग की विधवा नारियों के लिए पुनर्विवाह का रास्ता खोलने का प्रयास करता है। प्रदीप जातिभेद की दीवार को धराशायी कर तमाम विरोधों और बाधाओं के बावजूद एक ईसाई लडकी से विवाह कर समाज के सामने अपने समय की जटिल परिस्थितियों में मध्यवर्गीय युवकों के लिए एक अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत करता है। धर्म और जाति मनुष्य द्वारा निर्मित ऐसे बंधन हैं जिन्हें स्वेच्छापूर्वक वह कभी भी तोडकर मुक्त हो सकते हैं। अनिरुध्द के लिए स्वच्छंद प्रेम अधिक श्रेयस्कर है। नारी पुरुष संबंधों के लिए वह विवाह संस्था पर प्रश्नवाचक चिह्न लगाता है। विवाह की अनिवार्य नियति में उसे न आस्था है और न ही वह उसे अंतत: आवश्यक मानता है। इन सब पीढ़ीगत पात्रों के चारित्रिक विश्लेषण द्वारा नाटककार ने मध्यवर्गीय समाज में नित्य उठानेवाली प्रश्नानुकूल समस्याओं की ओर मध्यवर्गीय बुध्दिजीवी वर्ग की चेतना का ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया है।"[१]

२.२ कथावस्तु में चित्रित संघर्ष का स्वरूप --

'युगे-युगे क्रांति' नाटक में चित्रित संघर्ष प्रतिक्रियावादी माता-पिता और उनके नवमतवादी बेटा-बेटी के बीच चल रहा है।

---

१ डॉ.वीणा गौतम - आधुनिक हिन्दी नाटकों में मध्यवर्गीय चेतना - पृ.९९।

डॉ.ज्ञानराज गायकवाड लिखते हैं --

" विष्णु प्रभाकर ऐसे नाटककार हैं,जिन्होंने संघर्ष तत्व के आधारपर अपने नाटकों को मर्मस्पर्शी प्रभावशाली एवं मनोहर रूप प्रदान किया है।" १

इस नाटक में एक पीढी से लेकर पाँचवी पीढीतक युवक-युवति एक नया कदम उठा लेते हैं लेकिन अपनी प्रौढावस्थातक आते-आते वे यह भी अनुभव करते हैं कि जो कदम उन्होंने क्रांति के लिए उठाया था आज उनकी क्रांतिकारिता बदले हुए संदर्भ में पुरानी पड गयी है और जब उनका बेटा नया कदम उठाता है तो उसे वे अपना अपमान मानते हैं। इसी कारण दो पीढी में संघर्ष निर्माण होता है।

इस संघर्ष को व्यक्त करने के लिए नाटककार ने विशिष्ट ढंग को अपनाया है। नाटक के आरंभ में सूत्रधार की देवीप्रसाद से भेंट दिखायी है। सूत्रधार देवीप्रसाद से कह देता है" मैं क्रांति की खोज में निकला हूँ और उसे मैं अपने नाटक के पात्रों के माध्यम से खोजना चाहता हूँ।" २

इस कथन के पश्चात कुछ व्यक्ति आपस में संघर्ष करते हुए दिखाई देते हैं। इन व्यक्तियों में कोई सन १८७५ के आस-पास के युग का प्रतिनिधि है,तो कोई सन १९०१ के युग का,कोई सन १९२०-२१ के युग का है तो कोई सन १९४२ के युग का और कोई आधुनिक युग का है। सूत्रधार देवीप्रसाद को दिखाता है कि हर व्यक्ति अपने - अपने युग में किस प्रकार क्रांतिकारी रहा और यह क्रांति करते समय उसे पुरानी रूढि तथा परंपराओं को नष्ट करने के लिए संघर्ष करना पडता है।

---

१ डॉ.ज्ञानराज गायकवाड - आधुनिक हिन्दी नाटकों में संघर्ष तत्व - पृ.३६४।

२ विष्णु प्रभाकर - युगे-युगे क्रांति - पृ.८।

२.२.१ प्रथम पीढी —

प्रस्तुत नाटक में पहली पीढी सन १८७५ की है। यहाँ संघर्ष का कारण है -- दिन में पत्नी का मुँह देखना। कल्याणसिंह और रामकली पति-पत्नी हैं। उन दिनों दिन में पत्नी का मुँह देखना निषिध माना जाता था। लेकिन कल्याणसिंह ने समाज को खोखला करनेवाले एक पाखण्ड का पर्दाफाश किया। उसने अपनी पत्नी का मुँह दिन में देखने का ढाढस किया लेकिन इसी कारण उसका पिता उसे बेंत की लाठी से मारता है। इस तरह दोनों में संघर्ष दिखायी देता है।

२.२.२ दूसरी पीढी —

प्रस्तुत नाटक में दूसरी पीढी सन १९०१ की है। यहाँ इनके संघर्ष का कारण विधवा से विवाह करना है। प्यारेलाल विधवा से विवाह करता है लेकिन प्यारेलाल का पिता कल्याणसिंह,जो अपने युग में क्रांतिकारी रहा, वह बेटे का साथ न देकर उसे हाथ-पाँव तोड देने की धमकी देता है।

२.२.३ तीसरी पीढी —

प्रस्तुत नाटक में तीसरी पीढी सन १९२०-२१ की दिखलाई है। यहाँ संघर्ष का कारण है समय का साथ देना।

प्यारेलाल की पुत्री शारदा,महात्मा गाँधी के असहयोग आंदोलन में सम्मिलित होती है। प्यारेलाल के अधिकार तथा कर्तव्य को शारदा स्वीकार नहीं करती। उसके सिर पर पल्लू भी नहीं है। वह जातीयता और प्रांतीयता की दीवारें तोडकर स्वतंत्रता के लिए बाहर आनेवाली लडकी है। लेकिन प्यारेलाल उसका साथ नहीं देता जिन्होंने अपने माता-पिता के विरुध्द विद्रोह कर एक विधवा से विवाह किया, लेकिन जब लडकी ने समय का साथ देने का प्रयत्न किया तो उसने उसका विरोध किया।

२.२.४ चौथी पीढी --

प्रस्तुत नाटक में चौथी पीढी सन १९४२ के समय की है। इस पीढी में संघर्ष का कारण अंतरधर्मीय विवाह रहा है।

शारदा और विमल का बेटा प्रदीप जैनेट नाम की ईसाई लडकी के साथ शादी करता है तब शारदा और विमल जैनेट का नाम बदलकर जान्हवी रखने के लिए कहते हैं। लेकिन प्रदीप इन बातोंपर विश्वास नहीं रखता। उसका मत है नाम और धर्म बदलने पर क्या बदल जाता है ? प्रदीप के इस बरताव के कारण विमल कहता है कि वह अपने जायदाद से प्रदीप को कुछ नहीं देगा और बाद में यह भी कहता है कि यह बेटा मेरे लिए मर गया।

२.२.५ पाँचवीं पीढी --

प्रस्तुत नाटक में पाँचवी पीढी बिल्कुल आधुनिक दिखलाई है। इसके संघर्ष का कारण है कि यह विवाह बंधन को मानती ही नहीं।

प्रदीप और जैनेट का बेटा अनिरुध्द और बेटी अन्विता ये दोनों मुक्त भोगी हैं। विवाह बंधन को अनिरुध्द स्वीकारता नहीं। वह कहता है स्त्री को पति की नहीं पुरूष की जरूरत होती है।' विवाह स्त्री की गुलामी का पट्टा है इसलिए बंधन है। अनिरुध्द की ऐसी बातों पर प्रदीप बहुत चीढता है।

अन्विता तो ऐसी आधुनिक युवती है जो प्रेम एक के साथ करती है और शादी दूसरे के साथ तय करती है। वह कहती है कि,' जिस क्षण चाहूँगी अलग हो जाऊँगी।' और अपनी शादी का कार्ड वह स्वयं अपने माता-पिता को देती है। उसके इस बर्ताव के माता-पिता नाराज हैं जो अपने काल में क्रांतिकारी थे। नयी पीढी विवाह का बंधन स्वीकार नही करना चाहती है बल्कि मुक्त आसंग को ही अधिक महत्व देती है। स्त्री- पुरूष यौन संबंध को ही महत्व देती है और कुछ नहीं। अत: यहाँ हम देख सकते है कि विवाह की मान्यताओं में पारिवारिक मूल्यों में परिवर्तन होते होते आगे विवाह के मूल्य का विघटन ही हुआ है।[१]

१ डॉ.गजानन सुर्वे - स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटकोंका सांस्कृतिक अध्ययन - पृ.३६०-३६१।

सुर्वेजी ने मूल्य-परिवर्तन और मूल्य-विघटन का चित्र इस तरह से लिखा है --

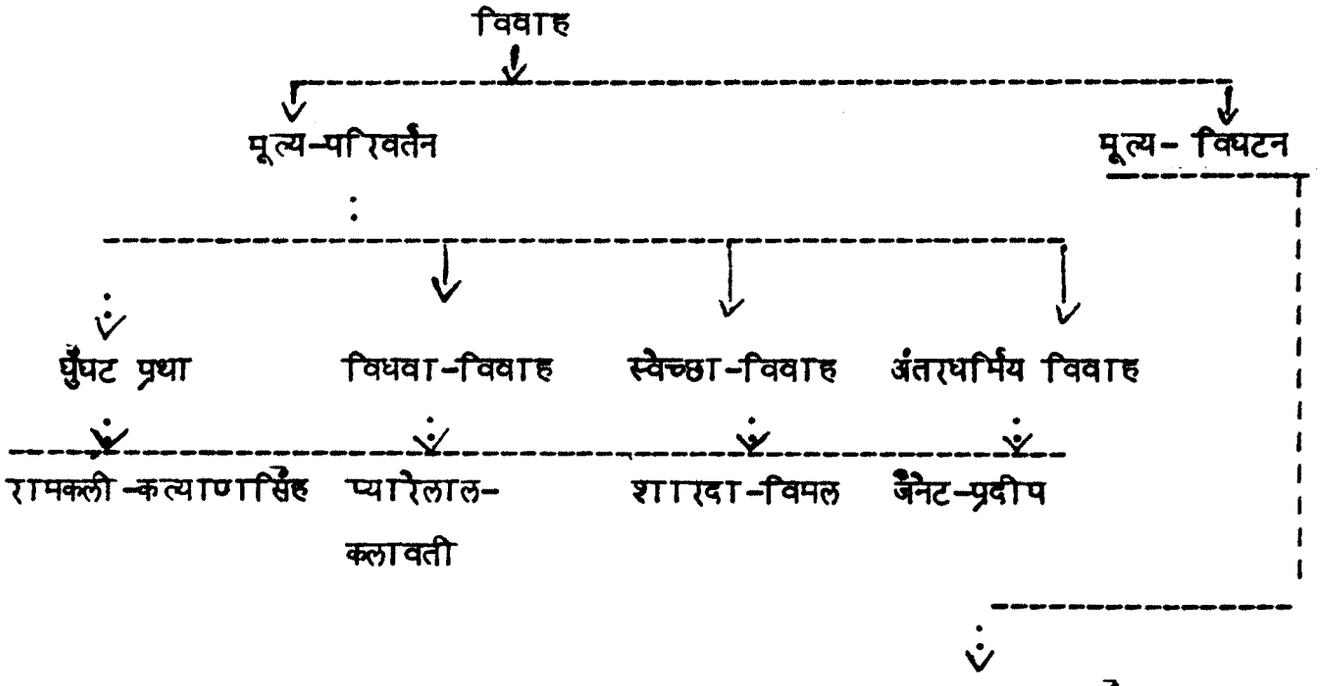


(१) अनिरुध्द अनेक
संगिनियाँ
अन्विता - अनेक प्रियकर

(२) विवाह - पत्नी

(३) यौनाचार - स्त्री पुरुष - पति

इस प्रकार हर नयी मान्यता, नए विचार और नए मूल्य सामने आते हैं। यह प्रक्रिया निरंतर है अत: इस तरह की क्रांति युगों-युगों से चलती आयी है और युगों-युगों तक चलती रहेगी। यह संघर्ष भी युगों-युगों तक चलता रहेगा।

अंतरिक संघर्ष का निर्माण इस नाटक में शारदा, प्रदीप तथा देवी - प्रसाद के मन में दिखाई देता है। शारदा 'युगे - युगे क्रांति' नाटक में तीसरी पीढी का प्रतिनिधित्व करनेवाली नारी है। उसकी बेटी सुरेखा जब अपने भाई का साथ देकर माँ को 'लेक्चर' सुनाती है तब शारदा को लगता है कि यह सुरेखा नहीं वह खुद है। इससे यह स्पष्ट होता है कि वह अपने बच्चों का साथ देना मन से चाहती है लेकिन उसका अहंम उसे रोक देता है।

प्रदीप चौथी पीढी का प्रतिनिधि है। उसका बेटा अनिरुध्द और बेटी अन्विता, दोनों जब नए विचार लेकर सामने आते हैं तब प्रदीप को लगता है कि अन्विता और अनिरुध्द हम ही हैं। जब वह उनसे विवाद करता है तो उसे लगता है कि वह स्वयं अपने आपको उत्तर दे रहा है, जैसे अपने ही विरुध्द खडा है।

देवीप्रसाद के मन में भी अंतर्द्वन्द्व दिखायी देता है। देवीप्रसाद पुरातन मान्यताओं को माननेवाला प्राचीन संस्कारों से ग्रस्त एक ऐसा पिता है जो अपनी पुत्री के प्रेम विवाह को मान्यता देने से इन्कार करता है लेकिन जब उसकी बेटी प्रेम-विवाह करती है तो उसका पत्र पढकर देवीप्रसाद कहता है --

"सोचता हूँ कुछ बुरा तो नहीं हुआ। सचमुच मुझे लगता है जैसे सर पर से कोई बडा बोझ उतर गया बहुत अच्छा लगता है मन को। जितना चाहूँ उतनी दूर तक उड सकता हूँ।"[१]

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे - युगे क्रांति - पृ.८६।

थोडी देर बाद वह कहता है —

" नही । यह नहीं हो सकता मैं उसका पिता हूँ । उसे मुझसे पूछे बिना विवाह करने का अधिकार नहीं । मुझे समाज में रहना है ।" [१]

इस कथन से हम जान जाते हैं कि भीतर से आधुनिक के प्रति आसक्त होते हुए भी देवीप्रसाद समाज के अन्य लोगोंसे भयभीत रहता है । इसी कारण वह भी अंत में प्रतिक्रियावादी बन जाता है ।

" शिल्प के धरातल पर हम कह सकते है कि इतनी लम्बी कालसीमा को मंच पर प्रस्तुत करनेवाला साठोत्तरी ही नहीं बल्कि संपूर्ण हिन्दी नाटय साहित्य में अन्य कोई नाटक शायद ही होगा । आज तक के नाटकों में अधिक से अधिक दो पीढियों के संघर्ष को प्रस्तुति हुई है । लेकिन यहाँ करीब करीब छह पीढियों के संघर्ष के माध्यम से सन १८७५ से आजतक के पारिवारिक परिवर्तन का लेखा-जोखा ही प्रस्तुत किया गया है ।" [२]

डॉ.माधव सोनटक्के जो ने इसमें छह पीढियों का संघर्ष बतलाया है जो कि गलत है क्योंकि इस नाटक में पाँच पीढियाँ वर्णित हैं, जो इस तरह हैं —

१) लालाजी - कल्याणसिंह और रामकली ।
२) कल्याणसिंह - प्यारेलाल और कलावती ।
३) प्यारेलाल - शारदा और विमल ।
४) शारदा - विमल - प्रदीप और जेनेट ।
५) प्रदीप और जेनेट - अनिरुध्द,अन्विता ।

" तरुण पीढी और पुरानी पीढी का संघर्ष शाश्वत संघर्ष होता है । क्योंकि आज की विद्रोही पीढी कल की सनातन पीढी बन जाती है । इस

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे - युगे क्रांति - पृ.८८ ।
२ डॉ.माधव सोनटक्के - आधुनिक हिन्दी मराठी नाटक - पृ.६७ ।

व्यापक संघर्ष को नाट्य विषय बनाकर विष्णु प्रभाकर जी ने इस संघर्ष को उद्घाटन के लिए नाट्य कथा के रूप में विशिष्ट व्यक्तियों के संघर्ष को चुनकर 'युगे - युगे क्रांति' नाटक का निर्माण किया है।[१] लेकिन प्रस्तुत नाटक में नाटककार ने संघर्ष को प्रमुखता नहीं दी तो प्रमुखता दी है क्रांति को, जो युगों-युगों से चलती आयी है और आगे भी चलती रहेगी। लेखक ने यहाँ मानव जीवन का कटु सत्य बतलाया है कि जो जीवन की युवावस्था में क्रांतिकारी होता है वह बुढापे में रूढिवादी अथवा परंपरावादी बन जाता है और नई पीढी का विरोध करता है। लेखक ने प्रस्तुत नाटक की कथा में इस बात की ओर संकेत किया है कि क्रांति का कोई अंतिम रूप नहीं होता है। वह पहले से चली आई है और आगे भी चलती रहेगी।

## निष्कर्ष --

इस तरह प्रस्तुत रचना में नाटककार ने यह व्याख्यायित किया है कि विवाह की परंपरा में किस तरह बदलाव आ गया है। इसे साबित करने के लिए प्रभाकर जी ने यह स्पष्ट किया है कि प्रत्येक पीढी का व्यक्ति प्रचलित समाज व्यवस्था, नियम, अनियम को लाँघकर कोई नया कदम उठाना चाहता है। प्रत्येक पीढी के लोगों को ऐसा लगता है कि वे ही क्रांतिकारी हैं। फिर भी अपनी प्रौढावस्था तक आते ही सभी दकियानूसी, पुरातनपंथी, परंपरावादी और रूढि - प्रिय बन जाते हैं।

नाटक की संपूर्ण कथावस्तु पाँच दृश्यों में विभाजित है। कथानक का आरंभ कौतुहलवर्धक है। इसका विकास विभिन्न पीढियों के लोगों द्वारा की क्रांति में संघर्ष वाली स्थिति विद्यमान है और नाटक की चरमसीमा पाँचवीं

---

१ डॉ. ज्ञानराज काशीनाथ गायकवाड - आधुनिक हिन्दी नाटकों में संघर्ष तत्व - पृ.३७१।

पीढी के अनिरुध्द और अन्विता के युक्त भोगी रूप में दिखाई देती है। निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि कथावस्तु के गठन की दृष्टि से प्रस्तुत रचना केवल सफलही नहीं बल्कि नाटय-साहित्य की महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

रंगमंच की दृष्टि से भी कथावस्तु सीधी और सरल है। दो पीढियों के बीच का फर्क दिखाने के लिए देवीप्रसाद और सूत्रधार का वार्तालाप दिखाया है। इसी वार्तालाप के कारण ही हम पीढी का समय जान जाते हैं। सूत्रधार और देवीप्रसाद के संवादों में जो वक्त होता है उसी वक्त में पात्र वेशभूषा करके रंगमंच पर आ जाते है और उतने ही काल में रंगभूषा की जा सकती है। स्पष्ट है की प्रस्तुत नाटक की कथावस्तु नाटय-तत्व से परिपूर्ण और पूर्णात: सफल है।